

## যঈফ ও জাল হাদিস

হাদিস নাম্বারঃ ৮৯

১/ বিবিধ

আরবী

صاحب الشيء أحق بحمله إلا أن يكون ضعيفا يعجز عنه فيعينه أخوه المسلم  
موضوع

رواه ابن الأعرابي في "معجمه" (235 / 1 - 2) وابن بشران في "الأمالى" (2 / 53 - 54) والحافظ محمد بن ناصر في "التنبيه" (16 / 1 - 2) من طريق يوسف بن زياد البصري عن عبد الرحمن بن زياد بن أنعم عن الأغر أبي مسلم عن أبي هريرة قال: دخلت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم السوق، فقعد إلى البزازين، فاشترى سراويل بأربعة دراهم، قال: وكان لأهل السوق رجل يزن بينهم الدراهم يقال له: فلان الوزان، قال: فدعي ليزن ثمن السراويل، فقال له النبي صلى الله عليه وسلم: "اتزن وأرجح"، فقال الوزان: إن هذا القول ما سمعته من أحد من الناس، فمن أنت؟ قال أبوهريرة: فقلت: حسبك من الرهق والجفاء في دينك ألا تعرف نبيك؟ فقال: أهذا نبي الله؟ وألقى الميزان ووثب إلى يد رسول الله صلى الله عليه وسلم، فجذبها رسول الله صلى الله عليه وسلم وقال: "مه إنما يفعل هذا الأعاجم بملوكها، وإني لست بملك، إنما أنا رجل منكم" ثم جلس فأتزن الدراهم وأرجح كما أمره النبي صلى الله عليه وسلم، فلما انصرفنا تناولت السراويل من رسول الله صلى الله عليه وسلم لأحملها عنه فمنعني وقال: الحديث، قال.. قلت: يا رسول الله أو إنك لتلبس السراويل؟ قال: "نعم بالليل والنهار، وفي السفر والحضر"، قال يوسف: وشككت أنا في قوله: ومع أهلي، "فإني أمرت بالستر فلم أجد ثوبا أستر

من السراويل

قلت: وهذا إسناد واه بمرة، يوسف هذا قال البخاري في " التاريخ الكبير " ( 4 / 2 / 388 ) : منكر الحديث، وأورده ابن الجوزي في " الموضوعات " ( 3 / 47 ) من طريق ابن عدي عن يوسف هذا، ثم قال: لا يصح، قال الدارقطني في " الأفراد " : الحمل فيه على يوسف بن زياد لأنه مشهور بالأباطيل، ولم يروه عن

الإفريقي غيره، وقال المناوي في " الفيض " : قال الحافظ العراقي وابن حجر ضعيف، وقال السخاوي: ضعيف جدا، بل بالغ ابن الجوزي فحكم بوضعه، وقال فيه يوسف بن زياد عن عبد الرحمن الإفريقي، ولم يروه عنه غيره ورده المؤلف يعني السيوطي أنه لم يتفرد به يوسف، فقد خرجه البيهقي في " الشعب " و " الأدب " من طريق حفص بن عبد الرحمن، ويرد بأن عبد الرحمن يعني الإفريقي قال ابن حبان: يروي الموضوعات عن الثقات، فهو كاف بالحكم بوضعه

قلت: والحق مع ابن الجوزي لما سيأتي، وما ذكره المناوي عن السيوطي من متابعة حفص بن عبد الرحمن، لعله تحريف، فالذي رأيته في " التعقبات على الموضوعات " للسيوطي ( ص 32 - 33 ) جعفر بن عبد الرحمن بن زياد، ولا آمن على نسخة " التعقبات " وكذا " الفيض " التحريف، وعلى كل حال لم أعرف ابن عبد الرحمن هذا والله أعلم، وكلام ابن الجوزي السابق نقله السيوطي في " اللآليء " ( 2 / 263 ) وارتضاه لأنه لم يتعقبه بشيء، لكنه قال: أخرجه الطبراني، وقال في " الحاوي " ( 2 / 101 ) بعد أن عزاه للطبراني وأبي يعلى

ويوسف وشيخه ضعيفان، وقال الهيثمي في " المجمع " ( 5 / 121 - 122 ) : رواه أبو يعلى والطبراني في " الأوسط " ، وفيه يوسف بن زياد البصري وهو ضعيف قلت: فذهل عن كونه شديد الضعف وعن علته الأخرى، وهي ضعف الإفريقي، ويوسف هذا ترجمه الخطيب في " تاريخه " ( 14 / 295 - 296 ) وروى عن النسائي أنه قال: ليس بثقة، وعن البخاري والساجي: منكر الحديث وكذا قال أبو حاتم كما في " الجرح والتعديل " ( 4 / 222 ) ، فهو متهم، ثم رأيت السخاوي قد أورد الحديث في "

الفتاوى الحديثية " (ق 86 / 1) وقال: سنده ضعيف جدا، واقتصر شيخنا في " فتح  
الباري " على ضعف روايته، ولشدة ضعفه جزم بعض العلماء بأنه صلى الله عليه  
وسلم لم يلبس السراويل

বাংলা

৮৯। বস্তুর মালিকই তার বস্তুটি বহন করার অধিক হকদার। তবে সে যদি দুর্বলতার কারণে তা বহন করতে  
অক্ষম হয়, তাহলে তাকে তার মুসলিম ভাই সহযোগিতা করবে।

হাদীসটি জাল।

হাদীসটি ইবনুল আরাবী তার “আল-মুজাম” গ্রন্থে (২৩৫/১-২), ইবনু বিশরান “আল-আমলী” গ্রন্থে (২/৫৩-৫৪)  
ও মুহাম্মাদ ইবনু নাসীর “আত-তানবীহ” গ্রন্থে (১৬/১-২) ইউসুফ ইবনু যিয়াদ আল-বাসরী সূত্রে তার শাইখ  
আব্দুর রহমান ইবনু যিয়াদ ইবনে আন’আম হতে ... বর্ণনা করেছেন।

আমি (আলবানী) বলছিঃ এ সনদটি একেবারেই নিম্ন পর্যায়ে। উক্ত ইউসুফ সম্পর্কে “তারীখুল কাবীর” গ্রন্থে  
(৪/২/৩৮৮) ইমাম বুখারী বলেনঃ তিনি মুনকারুল হাদীস। ইবনুল জাওযী হাদীসটিকে তার “আল-মাওযু’আত”  
গ্রন্থে (৩/৪৭) ইবনু আদীর সূত্রে উল্লেখ করে বলেছেনঃ হাদীসটি সহীহ নয়। দারাকুতনী “আল-আফরাদ” গ্রন্থে  
বলেনঃ এ হাদীসটির সমস্যা হচ্ছে ইউসুফ ইবনু যিয়াদ। কারণ তিনি বাতিল হাদীস বর্ণনার ক্ষেত্রে প্রসিদ্ধ। আর  
তিনি ছাড়া ইফরীকী হতে অন্য কেউ বর্ণনা করেননি। মানবী তার “আল-ফায়য” গ্রন্থে বলেন, হাফিয ইরাকী ও  
ইবনু হাজার বলেছেনঃ তিনি দুর্বল। সাখাবী বলেনঃ তিনি নিতান্তই দুর্বল। ইবনুল জাওযী হাদীসটির ব্যাপারে জাল  
হিসাবে হুকুম লাগিয়ে বলেছেন যে, তাতে ইউসুফ ইবনু যিয়াদ আল-বাসরী রয়েছেন, তিনি আবদুর রহমান আল-  
ইফরীকী হতে বর্ণনা করেছেন। তিনি তার নিকট হতে একমাত্র বর্ণনাকারী।

সুয়ূতী বলেনঃ তিনি আব্দুর রহমান হতে একক বর্ণনাকারী নন, বরং বাইহাকী তার “আল-শু’য়াব” গ্রন্থে এবং  
“আল-আদাব” গ্রন্থে হাফস ইবনু আবদুর রহমান সূত্রে বর্ণনা করেছেন। এর উত্তরে বলতে হচ্ছে যে আমরা  
আব্দুর রহমান আল-ইফরীকীর কথা বলছি।

ইবনু হিব্বান বলেনঃ يروي الموضوعات عن الثقات، فهو كاف بالحكم بوضعه তিনি (ইউসুফ) নির্ভরযোগ্যদের  
উদ্ধৃতিতে জাল হাদীস বর্ণনাকারী। অতএব তিনিই হাদীসটি জাল হওয়ার জন্যে যথেষ্ট।

আমি (আলবানী) বলছিঃ হক হচ্ছে ইবনুল জাওযীর সাথে (তার কথাই ঠিক)। যারা ইউসুফকে শুধু দুর্বল বলেছেন,  
তারা তিনি যে, নিতান্তই দুর্বল তা না বলে ভুল করেছেন। এছাড়া (দ্বিতীয় কারণ) শাইখ আব্দুর রহমান আল-  
ইফরীকীও যে নিতান্তই দুর্বল এটি বলতেও তারা ভুলে গেছেন।

খাতীব বাগদাদী তার “তারীখু বাগদাদ” গ্রন্থে (১৪/ ২৯৫-২৯৬) ইউসুফ সম্পর্কে বলেন, নাসাঈ হতে বর্ণিত হয়েছে তিনি বলেনঃ তিনি নির্ভরযোগ্য নন। বুখারী ও সাজী বলেনঃ তিনি মুনকারুল হাদীস। আবু হাতিমও এরূপ কথাই বলেছেন, যেমনভাবে তার “আল-জারহ ওয়াত তা’দীল” গ্রন্থে (৪/২২২) এসেছে। তিনি হচ্ছেন মিথ্যার দোষে অভিযুক্ত।

সাখাবী হাদীসটি “ফাতাওয়াল হাদীসাহ” গ্রন্থে (কাফ ৮৬/১) উল্লেখ করে বলেছেনঃ হাদীসটির সনদ নিতান্তই দুর্বল।

হাদিসের মান: জাল (Fake) পুনঃনিরীক্ষিত

পাবলিশারঃ তাওহীদ পাবলিকেশন

🔗 Link — <https://www.hadithbd.com/hadith/link/?id=5350>

📖 হাদিসবিডির প্রজেক্টে অনুদান দিন